* दर्शनशास्त्र: परम्परागत रूप से जीवन और जगत के मूल या प्रारम्भ में तत्वों कि ~~सब~~ संख्या उसके स्वरूप और लक्ष्य का तार्किक सर्वांगीन विश्लेषात्मक अध्ययन करने वाले शास्त्र को दर्शनशास्त्र कहते है।

⇒ मूल तत्व के संदर्भ में दो बातों का अध्ययन किया जाता है-

i) मूल तत्व कि संख्या कितनी है?

ii) मूल तत्व का स्वरूप क्या है?

दोनों प्रश्नों के उत्तर को लेकर दार्शनिकों के बीच मतभेद है।

⇒ मूलतत्व के संख्या निर्धारण के क्रम में तीन सिद्धांत उभरकर सामने आते है:-

i) एकतत्ववादी

ii) द्वैतवादी

iii) बहुतत्ववादी / अनेकतत्ववादी

⇒ एकतत्ववादी वह सिद्धांत है जो जीवन और जगत के मूल तत्वों कि संख्या एक मानता है। इसके समर्थक स्पिनोजा, शंकराचार्य आदि है। स्पिनोजा का ईश्वर, शंकर का ब्रह्म इस जीवन और जगत का मूल-तत्व है। शंकर का दर्शन अद्वैतवादी, स्पिनोजा का दर्शन सर्वेश्वरवादि है।

⇒ द्वैतवादी वह सिद्धांत है जो जीवन और जगत मूल में तत्वों की संख्या दो मानता है। इसके उदाहरण देकर्त और सांख्य का दर्शन आदि है। जहाँ देकर्त मन और शरीर को वही सांख्य प्राकृति और पुरुष को मूलतत्व मानता है।

⇒ बहुतत्वादी वह सिद्धांत है जो जीवन और जगत

Scanned with CamScanner

के मूल में अनेक तत्वों की सत्ता में विश्वास करता है लाइबनित्स का चिदणुवाद, जैन का अनेकान्तवाद, न्याय-वैशेषिक का परमाणुवाद आदि इसके उदाहरण है।

⇒ इसी प्रकार जीवन और जगत के मूल में निहित तत्वों के स्वरूप को लेकर दो सिद्धांत उभरकर सामने आते हैं:-

i) भौतिकवाद
ii) अध्यात्मवाद

⇒ भौतिकवाद वह सिद्धांत है जो जीवन और जगत के मूल में निहित तत्वों का स्वरूप मूलतः जड़ / भौतिक मानता है। इसे माननेवाले को भौतिकवाद ~~वाद~~ कहा जाता है। इसके समर्थक चार्वाक, ~~एवं~~ मार्क्स आदि हैं।

⇒ अध्यात्मवाद वह सिद्धांत है जो जीवन और जगत के मूल में निहित तत्वों का स्वरूप चेतन स्वरूप मानता है, ऐसे माननेवाले को अध्यात्मवाद कहते हैं। लाइबनित्स, शंकर आदि का दर्शन इसके उदाहरण कहे जा सकते हैं।

⇒ दर्शनशास्त्र में जीवन और जगत के अंतिम लक्ष्य के संबंध में भी तीन मत देखने को मिलते हैं:-

i) स्वर्ग प्राप्ति
ii) मोक्ष प्राप्ति
iii) मानव कल्याण

⇒ वैदिक युग तक जीवन का लक्ष्य स्वर्ग प्राप्ति था, उपनिषद से वेदांत तक यह मोक्ष के रूप में देखने को मिलता है, परंतु

Scanned with CamScanner

समकालीन दर्शन में (जैसे- रविन्द्रनाथ, राधाकृष्णन, विवेकानन्द आदि के दर्शन) जीवन और जगत का लक्ष्य मानव - कल्याण को बताया है।

* तत्व मीमांसा → समीक्षा / खोज / विवेचना

चेतन — अचेतन

चेतन गुण
- सुख-दुःख
- राग-द्वेष
- आनन्द
- घृणा
- संवेग
- दर्द
- विषाद
- हर्ष
- भावना आदि

अचेतन गुण
भौतिक गुण
- लम्बाई
- आयतन
- वजन आदि

अतः तत्वमीमांसा दर्शनशास्त्र की एक प्रमुख शाखा है, जिसमें मूल तत्वों की संख्या (एकतत्ववादी / द्वैतवादी / अनेकतत्ववादी) मूल तत्वों के स्वरूप (भौतिकवाद / अध्यात्मवाद) की विवेचना कि जाती है। तत्वमीमांसा में प्रायः आत्मा ईश्वर जगत के मूल तत्व, प्रकृति, पुरुष, जीव सत्ता, पदार्थ, द्रव्य आदि की विवेचना की जाती है।

* एकतत्ववादी अध्यात्मवाद : वह तत्वमीमांसीय सिद्धांत जो जीवन और जगत के मूल में एक ही तत्व की सत्ता को स्वीकार करता है तथा उसे स्वरूप चेतन मानता है उसे एकतत्ववादी अध्यात्मवाद कहा जाता है। जैसे शंकर का दर्शन। शंकर ब्रह्म को ही जीवन और जगत का मूलतत्व मानता है, और जगत का मूलतत्व और ब्रह्म स्वरूप चेतन है।

* एकतत्ववादी भौतिकवाद : वह तत्वमीमांसीय सिद्धांत जो जीवन और जगत के मूल में एक ही तत्व की सत्ता स्वीकार करता है परंतु उसे स्वरूपतः अचेतन मानता है उसे एकतत्ववादी भौतिकवाद कहा जा सकता है। प्रथम ग्रीक

Scanned with CamScanner

दार्शनिक थेलीज ने जीवन और जगत के मूल में जल को ही एक मात्र तत्व माना था। उन्होंने सम्पूर्ण जगत का विकास जल से ही बताया। जल स्वभावतः अचेतन है।

* बहुतत्ववादी अध्यात्मवाद: वह तत्वमीमांसीय सिद्धांत जो जीवन और जगत के मूल में अनेक तत्व को स्वीकार करता है तथा उसे स्वरूपतः चेतन मानता है उसे बहुतत्ववादी अध्यात्मवाद कहा जाता है। लाइबनित्स का चिदणुवाद कहा जाता है इसका उदाहरण है। लाइबनीत्स जीवन और जगत के मूल में अनेक चिदणु की सत्ता को स्वीकार करता है। प्रत्येक चिदणु चेतन है परंतु चेतना की मात्रा में ~~उसमें~~ भेद पायी जाती है।

* बहुतत्ववादी भौतिकवाद: वह तत्वमीमांसीय सिद्धांत जो जीवन और जगत के मूल में अनेक तत्व की सत्ता को स्वीकार करता है परंतु उसे स्वरूपतः भौतिक मानते है उसे बहुतत्ववादी भौतिकवाद कहा जाता है। चार्वाक न्याय - वैशेषिक आदि का दर्शन इसके उदाहरण है। ये जीवन और जगत के मूल में पृथ्वी, जल, अग्नि, वायु, आकाश (चार्वाक को छोड़कर) को मानता है। यह स्वभावतः अचेतन है।

तत्वमीमांसा के तीन भाग

ईश्वरमीमांसा: ईश्वर की सत्ता है या नहीं? यदि है तो कितने है? ईश्वर का स्वरूप (व्यक्तित्वपूर्ण या निर्वैयक्तिपूर्ण) क्या है?

⇒ वैयक्तित्वपूर्ण का अर्थ जिस पर गुण का आरोपण किया जा सके यह भक्त का ईश्वर है। आदि

Scanned with CamScanner

तत्वमीमांसा के तीन भाग

1. ईश्वर मीमांसा – ईश्वर की सत्ता है या नहीं ? यदि है तो कितने है ? ईश्वर का स्वरूप (व्यक्तित्वपूर्ण या निर्वैयक्तिकपूर्ण) क्या है?
– वैयक्तित्वपूर्ण का अर्थ जिस पर गुणों का आरोपन किया जा सके यह भक्त का ईश्वर है। आदि।

2. मनोविज्ञान – यह आत्मा की प्रकृति (चेतन/अचेतन, पुनर्जन्म, परिवर्तनशील या अपरिवर्तनशील) आदि का तर्कपूर्ण विवेचन किया जाता है।

3. सृष्टिमीमांसा – जगत् का स्वरूप, इसके बनने की प्रक्रिया, इसके अस्तित्व आदि प्रश्नों का उत्तर दिया जाता है।

* ज्ञानमीमांसा/ज्ञान के सिद्धांत :- ज्ञानमीमांसा दर्शनशास्त्र की एक प्रमुख शाखा है जिसके अन्तर्गत ज्ञानप्राप्ति के साधन, ज्ञान की सीमा ज्ञान की प्रमाणिकता, ज्ञान के स्वरूप, ज्ञाता-ज्ञेय संबंध आदि की विवेचना की जाती है।

* यथार्थ ज्ञान प्राप्ति के साधन/स्त्रोत :- भारतीय दर्शन में यथार्थ ज्ञान प्राप्ति के साधन/स्त्रोत को प्रमाण कहा गया है। प्रमाण के छः भेद है - प्रत्यक्ष, अनुमान, शब्द, उपमान, अर्थापत्ति, अनुपलब्धि।

* पश्चात्य दर्शन में यथार्थ ज्ञान प्राप्ति के साधन बुद्धि तथा अनुभव को माना गया है। अतः यथार्थ ज्ञान प्राप्ति के साधन के रूप में दो सिद्धांत उभरकर सामने आते है - बुद्धिवाद और अनुभववाद।

Scanned with CamScanner

* बुद्धिवाद वह ज्ञानमीमांसीय सिद्धांत है जो यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का साधन अनुभव को न मानकर बुद्धि को मानती है। इसके समर्थक देकार्ट, स्पिनोजा, लाइबनित्स आदि है।

* अनुभववाद वह ज्ञानमीमांसीय सिद्धांत है जो यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का साधन अ बुद्धि को न मानकर अनुभव को मानती है। इसके समर्थक लॉक, बर्कले, ह्यूम आदि है।

* हमारा समस्त गणितीय ज्ञान जहाँ बुद्धि से संबंधित है वहीं हमारा समस्त वैज्ञानिक ज्ञान अनुभव से संबंधित है।

* ज्ञानमीमांसा के तीन भाग :

1. प्रमाणमीमांसा :- ज्ञानमीमांसा का वह भाग जो ज्ञानप्राप्ति के साधन/स्रोतों का तर्कपूर्ण विवेचन करें

2. ख्यातिवाद :- भ्रम की व्याख्या का तर्कपूर्ण विवेचन

3. प्रामाण्यमीमांसा :- प्राप्त ज्ञान की प्रमाणिकता वस्तु में निहित है या बाहर से आती है, इस समस्या का तर्कपूर्ण विवेचन

* कर्म-नियम :- कर्म नियम के अनुसार अच्छे कर्मों के फल अच्छा तथा बुरे कर्मों का फल बुरा कर्ता को अवश्य प्राप्त होता है। जो जैसा बोएगा वह वैसा काटेगा। कर्म-नियम को भारतीय दर्शन का मेरूदंड माना गया है।

* कर्म-नियम को मानने पर कुछ तत्वमीमांसक सत्ता को स्वीकारना आवश्यक हो जाता है यद्यपि इसकी कुछ आलोचनाएँ भी है -
i) ईश्वर ii) पूर्वजन्म/पुनर्जन्म iii) आत्मा की अमरता iv) मोक्ष

* जैन और बौद्ध यद्यपि कर्म-नियम को मानते है परंतु ईश्वर की सत्ता में विश्वास नहीं करते है।

Scanned with CamScanner

* भारतीय दर्शन की मूलभूत विशेषताएं :-

1. कर्म नियम मे विश्वास
2. आत्मा की अमरता मे विश्वास (अपवाद - चार्वाक व बौद्ध)
3. पूर्वजन्म एंव पुनर्जन्म मे विश्वास
4. दुःखो को दुर करना भारतीय दर्शन का परम उद्देश्य है।
5. मोक्ष जीवन का चरम आध्यात्मिक लक्ष्य - (चार्वाक - अपवाद)
6. भारतीय दर्शन यह मानता है जीवन एक रंगमंच की भाँति है जिस पर हमे अपने कर्तव्यों का पालन करना है।
7. प्रत्येक भारतीय दर्शन जीवन जीने की एक पद्धति बताता है। भारतीय दर्शन जीवन से घनिष्ठता से संबंधित है।
8. भारतीय दर्शन का विकास समानान्तर रूप से हुआ है।
9. भारतीय दर्शन मे अध्यात्मवादी प्रवृती प्रबल रही है (अपवाद - चार्वाक)
10. भारतीय दर्शन आरम्भ के संकीर्ण दृष्टिकोण से तो निराशावादी कहा जा सकता है जबकि अपनी पूर्णता मे भारतीय दर्शन निराशावादी ना होकर आशावाद से ओत-प्रोत है।

Scanned with CamScanner

* चार्वाक दर्शन *

* ज्ञान का सिद्धांत :

~~सप्तभंगी नय~~

* अतीन्द्रिय सत्वों का अस्वीकार :

अति - इन्द्रिय (इन्द्रियों से परे - अनुभव से परे)
↳ जैसे - ईश्वर, परलोक, पुनर्जन्म

* तत्व मीमांसा (metaphysics)
↳ खोज / समीक्षा / विवेचना

* तत्व मीमांसा दर्शन शास्त्र की एक प्रमुख शाखा है जिसमे मूल तत्व की संख्या (एकतत्ववाद, द्वैतवाद, बहुतत्ववाद) मूल तत्व के स्वरूप (भौतिकतावाद, आध्यात्मवाद आदि) की विवेचना की जाती है।

तत्व मीमांसा में प्रायः ईश्वर, आत्मा जगत के मूल तत्व, पुनर्जन्म, सत्ता (Reality), पदार्थ, द्रव्य आदि की विवेचना सम्मिलित होती है।

ज्ञान का सिद्धांत
↑
* ज्ञान मीमांसा - ज्ञान मीमांसा दर्शन शास्त्र की एक प्रमुख (epistemology) शाखा है जीसमें ज्ञान प्राप्ति के साधन, ज्ञान के स्वरूप, ज्ञान की सीमा, ज्ञान की प्रामाणिकता, ज्ञाता - ज्ञेय संबंध आदि की विवेचना की जाती है।

Scanned with CamScanner

1. अप्रमा – अयथार्थ अनुभव –
↑
प्रमा – प्रमाण – प्रमेय – प्रमाता

यथार्थ, अनुभव
↙ ↘
यथा (के अनुसार) अर्थ (वस्तु)

जैसी वस्तु वैसा ज्ञान
↓
सही ज्ञान

यथार्थ ज्ञान की प्राप्ति का साधन जैसे ↓
→ प्रत्यक्ष
→ अनुमान
→ शब्द
→ उपमान
→ आदि

या
ज्ञेय ↓
जिसे जाना जाए (वस्तु या पदार्थ)

ज्ञाता ↓
जानने वाला / जो जानता है।

* चार्वाक दर्शन :→

1. नास्तिक
2. अनीश्वरवादी
3. भौतिकतावादी
4. बहुतत्त्ववादी दर्शन

*
जीवन + जगत — मूलतत्त्व — भौतिक या भूततत्व / जड़तत्व ↓ जड़वाद
↑
भौतिकतावाद

वस्तुवाद के अनुसार ज्ञेय (वस्तु) की सत्ता ज्ञाता से पृथक व स्वतंत्र है। यह ज्ञान मीमांसीय सिद्धांत है।

* चार्वाक शब्द का आशय :→

1. चार्वाक शब्द, 'चारु + वाक' से मिलकर बना है जिसका अर्थ सुन्दर वचन है।

2. चार्वाक शब्द 'चर्व' धातु से बना है। जिसका अर्थ चबाना है। – खाओ, पिओ, मौज उड़ाओ।

Scanned with CamScanner

3. चार्वाक नामक ऋषि द्वारा प्रतिपादित।

4. देवताओं के गुरु बृहस्पति द्वारा इसका प्रतिपादन।

* अन्य शब्द :→

* अनवस्था दोष :→ अनन्त तक जाने की स्थिति।

* आत्माश्रय दोष :→ यह दोष तब उत्पन्न होता है, जब जिसे सिद्ध करना है, उसे सिद्ध करने से पहले ही स्वीकार कर लिया जाये। इसे चक्रक दोष की भी संज्ञा दी जाती है।

* साहचर्य (साथ-2) :→ * नियत - हमेशा (जैसे- धुएँ व आग का संबंध।)
* सार्वभौम - सर्वत्र

Exa. - सभी मनुष्य ईमानदार हैं
राम एक मनुष्य है।
↳ राम ईमानदार है। (यहाँ निष्कर्ष आधार वाक्यों में पहले से ही व्याप्त है, यह निगमनात्मक अनुमान का दोष है।)

→ यह दोष निगमनात्मक अनुमान का दोष है।

* वर्णन :→
→ भावात्मक - स्वीकारात्मक
→ निषेधात्मक - नकारात्मक भाव से स्वीकारना
Negative discription

Scanned with CamScanner

* चार्वाक की ज्ञान मीमांसा / चार्वाक का ज्ञान का सिद्धांत *| चार्वाक का प्रमाण विचार *

1. भूमिका :→ भौतिकतावादी, बहुतत्ववादी, नास्तिक, अनीश्वरवादी, वस्तुवादी दर्शन।

⇓

2. ज्ञान मिमाँसा प्राथमिक से आरम्भ :→ चार्वाक दर्शन का प्रारम्भ उनकी ज्ञान मीमांसीय विवेचना से होता है।

⇓

3. प्रत्यक्ष एकमात्र प्रमाण :→ यथार्थ ज्ञान प्राप्ति का साधन

⇓

4. अर्थ
   - संकीर्ण अर्थ :- प्रति + अक्ष = प्रत्यक्ष - आँखों के सामने (चक्षु से प्राप्त ज्ञान)
   - व्यापक ,, :- स्वीकार्य अर्थ - पँच ज्ञानेन्द्रियों से प्राप्त ज्ञान

⇓

5. आवश्यकता
   - इन्द्रिय
   - अर्थ (वस्तु)
   - सन्निकर्ष

चाक्षुस	→ आँख
त्वाचिक	→ त्वचा
रासन	→ जीह्वा
श्रोत	→ कान
घ्राणज	→ नाक

⇓

6. प्रत्यक्ष प्रमाण क्यों है
   - विश्वसनीयता
   - अभ्रांतता
   - प्रामाणिकता

⇓

7. प्रत्यक्ष एकमात्र प्रमाण क्यों।
   - उपरोक्त विशेषताएं अनुमान आदि अन्य प्रमाणों मे नहीं
   - अन्य प्रमाणों के खंडन से इस बात की सिद्धी की प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है।

Scanned with CamScanner

8. अन्य प्रमाणों का खंडन — अनुमान, शब्द आदि का खंडन।

9. अनुमान प्रमाण का खंडन → अनु + मान (पश्चात, ज्ञान)

पूर्वज्ञान के पश्चात और उसी पर आधारित ज्ञान

उदाहरण स्वरूप :→ धुँए को देखकर अग्नि का ज्ञान - अनुमान

* अनुमान का आधार एवं प्राण :→ व्याप्ति है

* व्याप्ति
  - वि - विशेष
  - आप्ति - संबंध

  } विशेष संबंध
  - किसके मध्य
    - हेतु
    - साध्य
  - कैसा सम्बन्ध
    - नियत
    - साहचर्य
    - सार्वभौम
    - अनौपाधिक
    - अव्यभिचारी (एकांतिक)
    - (शर्तरहित)

* उदाहरण :- जहाँ-2 धुआँ है वहाँ-2 आग है।

इस व्याप्ति सम्बन्ध की सिद्धि किसी भी प्रकार से नहीं की जा सकती।

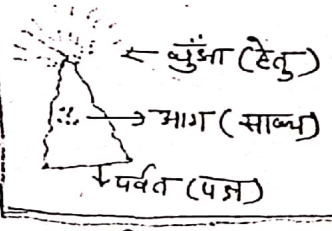

10. व्याप्ति की सिद्धि →

1. → प्रत्यक्ष से नहीं → प्रत्यक्ष का क्षेत्र सीमित → प्रत्यक्ष सीमित के आधार पर सार्वभौम सम्बन्ध की स्थापना नहीं

→ ऐसा करने पर →

→ अवैध सामान्यीकरण का दोष

Scanned with CamScanner

६ शब्द - विश्वसनीय व्यक्ति का वचन ही शब्द प्रमाण है।

2. → अनुमान से नहीं → करने पर → चक्रक दोष
→ अनावस्था दोष

* चक्रक दोष → अनुमान
↓
व्याप्ति
↓
चक्रक दोष

* अनावस्था दोष :-
अनुमान
↓
व्याप्ति → दूसरे अनुमान
↓
व्याप्ति → तीसरे

3. → शब्द से नहीं
→ अनुमान की स्वतन्त्रता खण्डित
→ सदैव विश्वसनीय व्यक्ति की आवश्यकता
→ चक्रक दोष की स्थिति उत्पन्न

यदि
अनुमान
↓
व्याप्ति
↓
शब्द

4. → कारणता सिद्धान्त से नहीं :→ कारणता सिद्धान्त भी स्वयं एक प्रकार की व्याप्ति है → अतः कारणता सिद्धान्त के आधार पर व्याप्ति को सिद्ध करने पर पुनः चक्रक दोष की स्थिति।

5. → सामान्यगत भी नहीं माना जा सकता
→ प्रत्यक्ष से केवल विशेषों का ज्ञान, सामान्य का नहीं, → न्याय दर्शन में ऐसा माना गया है →

Scanned with CamScanner

→ चार्वाक मतानुसार ऐसा मानने पर पुनः चक्रक दोष की स्थिति।

↓ प्रति एवं स्वार्थ की सिद्धि हेतु की गयी है। अतः अस्वीकार्य है।

6. → ** व्याप्ति को अनौपाचिक सम्बन्ध माना जाता है परन्तु इस अनौपाचिक सम्बन्ध की सिद्धि प्रत्यक्ष से नहीं की जा सकती है।

11. आखिर अनुमान क्या है

→ अनुमान एक विशुद्ध मनोवैज्ञानिक प्रक्रिया है।

→ निश्चित एवं असंदिग्ध ज्ञान प्राप्त करना इसका स्वभाव नहीं है, यद्यपि की यह कभी-2 सत्य हो जाता है।

→ यह अनुभव के दौरान हमारे मन मे स्थापित हो जाने वाले साहचर्य का फल है।

12. शब्द प्रमाण का खंडन → शब्द प्रमाण

- न्याय, मीमांसा एवं दर्शन मे शब्द को प्रमाण माना गया है।
- विश्वसनीय व्यक्ति का वचन शब्द प्रमाण माना जाता है।

- लौकिक
  - साधारण
  - विश्वसनीय
    - ↓ पहचान, अनुमान आधारित
    - अनुमान प्रमाण नहीं है
- वैदिक
  - → असत्य विरोधाभासों से युक्त
  - इनकी रचना समाज के एक वर्ग विशेष के द्वारा अपनी आजीविका को

Scanned with CamScanner

3. उपमान प्रमाण का खंडन

उपमान सादृश्यता (समानता) के ज्ञान पर आधारित, सादृश्यता का ज्ञान प्रत्यक्ष से ही हो जाता है। उपमान को प्रमाण मानने की ~~आवश्यकता मानने~~ ~~की~~ आवश्यकता नहीं।

4. अंतिम स्थिति

अन्य प्रमाणों के खंडन से इस बात की सिद्धि होती है कि "प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है।"

5. आलोचना

शेष आलोचना Pathak notes में।

→ चार्वाक अनुमान का खंडन हेतु तर्क प्रस्तुत करते है। और अपने तर्कों को सही मानते है। तर्क स्वयं अनुमान की प्रक्रिया का एक भाग है। दूसरे शब्दो मे चार्वाक अनुमान के खंडन के क्रम मे अनुमान की ही प्रक्रिया का सहारा लेते है।

→ चार्वाक अनुमान के खंडन के क्रम मे अनुमान की मदद लेते है, इसे हमे तर्क द्वारा देख सकते है। जो प्रत्यक्ष गम्य मे नही है वह प्रामाणिक नहीं है। अनुमान प्रत्यक्ष ग्राह्य नहीं है। इसलिये अनुमान प्रामाणिक नहीं है। यह एक प्रकार का निगमनात्मक अनुमान है।

Scanned with CamScanner

Q. प्रश्न :- प्रत्यक्ष क्यों → मौन / मुखर
↓
तर्क → वाक्य / शब्द → अनुमान

→ जीवन मे कुछ प्रत्यक्ष → अनुमान → मानसिक प्रक्रिया
चार्वाक अनुमान से यह मानते है कि कुछ लोगो ने अनुमान को सही ज्ञान माना है।

Q.1. चार्वाक क्यों एकमात्र प्रत्यक्ष को ही प्रमाण मानता है।

Q.2 चार्वाक के मत की कि प्रत्यक्ष ज्ञान ही ज्ञान का एकमात्र वैध स्रोत होता है, का कथन कीजिए :→

→ प्रत्यक्ष : → विश्वसनीयता / प्रामाणिकता / अभ्रांतता
↓
प्रमाण

∵ इस प्रकार की चीजें अन्य प्रमाणों मे नहीं है व इस प्रकार प्रत्यक्ष के अलावा अन्य प्रमाणों का खंडन होता है। अतः प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है।

Scanned with CamScanner

* चार्वाक *

{ चार्वाक दर्शन में खंडनात्मक पक्ष अधिक प्रबल है
- ज्ञान मीमांसा खंडन
- तत्व मीमांसा खंडन

ज्ञान मीमांसा / * ज्ञान का सिद्धान्त *

(e.g. - अनुमान का खंडन)

* भावात्मक पक्ष

1. प्रत्यक्ष ही एकमात्र प्रमाण है।
2. प्रत्यक्ष की परिभाषा
3. प्रत्यक्ष के प्रकार
4. वस्तुवादी स्थिति

* निषेधात्मक पक्ष / खंडनात्मक

1. अनुमान प्रमाण का खंडन
2. शब्द प्रमाण का खंडन
3. उपमान प्रमाण का खंडन

} * अधिक बल देता है।

*** { अवश्य खंडन करना है }

↓

तार्किक परिणाम

* तत्व की मीमांसा * सत्ता का स्वरूप

* भावात्मक

- जगत की सत्ता स्वीकार्य
- चार प्रकार के मूल तत्व
  - पृथ्वी
  - अग्नि
  - वायु
  - जल
- बहुतत्ववाद
- भौतिकतावाद

(अतीन्द्रिय सत्ताओं का अस्वीकार) ****

* निषेधात्मक

- आत्मा का खंडन
- ईश्वर का खंडन
- पुनर्जन्म का खंडन
- स्वर्ग - नरक का खंडन
- मोक्ष का खंडन

} अधिक बल देता है।

तार्किक परिणाम

Scanned with CamScanner

नीति शास्त्र

* भावात्मक पक्ष
  - सुखवाद :- सुख जीवन का चरम लक्ष्य
    - (i) निकृष्ट सुखवाद - शारीरिक सुख जीवन का चरम लक्ष्य
  - इहलौकिकतावाद :- इसी संसार की बात
  - स्वार्थवाद
  - अर्थ और काम

* निषेधात्मक पक्ष
  - धर्म एवं मोक्ष का खंडन
  - पूर्वजन्म एवं पुनर्जन्म का खंडन
  - नैतिक मूल्यों पर भी प्रहार

* सुशिक्षित चार्वाक अर्थ और काम के साथ-2 धर्म (सदाचार, नैतिक मूल्य आदि को भी स्वीकार करते हैं)

Scanned with CamScanner

* अतिन्द्रिय सत्ताओं का अस्वीकार *

सत्व (entity)

↓

सत्ता

इन्द्रिय सत्ता

↓

आनुभाविक सत्ता

↓

लौकिक सत्ता

↓

देश - काल में

अतीन्द्रिय सत्ता

↓

अति + इन्द्रिय

↓

इन्द्रियों से परे

↓

अनुभवातीत सत्वों का खंडन

↓

अलौकिक / परलौकिक सत्ता

↓

देश काल से परे

Scanned with CamScanner

* अतीन्द्रिय सत्वों का खंडन * २०।। *

1. भूमिका :→ ज्ञान मीमांसा से प्रारम्भ ⟷ अपनी तत्व मीमांसा को स्थापित करने का प्रयास

⇓

2. प्रत्यक्ष को एकमात्र प्रमाण (सही ज्ञान प्राप्ति का स्वतन्त्र साधन) ⟶ परिणाम
   - → खंडन → आत्मा, ईश्वर, स्वर्ग-नरक पुनर्जन्म, मोक्ष आदि → क्योंकि इनका प्रत्यक्ष नहीं।
   - → मंडन → 4 प्रकार के मूल तत्व → पृथ्वी, अग्नि, वायु, जल
     - ↓ जड़त्ववाद
     - ↓ भौतिकतावादी
     - ↓ बहुतत्ववादी

⇓

3. जगत विचार

1. → सत् या वास्तविक है। → क्योंकि प्रत्यक्ष है।
2. → उत्पत्ति → 4 प्रकार के जड़तत्वों से → 5वां तत्व आकाश स्वीकार्य नहीं।
   - ↓ ज्ञान अनुमान से
   - ↓ प्रमाण नहीं
3. → स्वभाववाद → जगत जड़तत्वों में निहित स्वभाव से उत्पन्न हुआ है।
4. → आकस्मिकतावाद → जगत जड़ तत्वों के आकस्मिक संयोग का परिणाम है → इसका कोई प्रयोजन नहीं है।

Scanned with CamScanner

4. आत्मा विचार → शरीर से पृथक, नित्य, शाश्वत, अमर, आत्मा का अस्तित्व नहीं → क्योंकि इसका प्रत्यक्ष नहीं।

5. चेतना स्वीकार्य → अन्य भारतीय दर्शनो मे → चेतना आत्मा से सम्बन्धित
- → चेतना आत्मा का आगन्तुक गुण है → न्याय, वैशेषिक
- → चेतना जीव का अनिवार्य गुण है → जैन एवं रामानुज
- → आत्मा चैतन्य स्वरूप है → सांख्य एवं शंकराचार्य

6. शरीर से सम्बन्धित: → शरीर का आगंतुक गुण → कब आती है
→ जब 5 प्रकार के जड़तत्व एक विशेष अनुपात मे आपस मे मीलते है, तो फिर शरीर मे चेतना आ जाती है।

7. सिद्धि का तर्क →
- शरीर → जब तक शरीर है तब तक चेतना है।
- शरीर × → शरीर नहीं है चेतना भी नहीं है।
- दैनिक अनुभव → मैं मोटा हूँ, मैं लम्बा हूँ आदि।
  - ↓ चेतना
  - ↓ शरीर

8. स्वभावतः प्रश्न: → जड़तत्वों मे किसी मे भी चेतना नहीं है तो उनके संयोग से चेतना की उत्पत्ति कैसे?

9. समाधान
- → पान का उदाहरण → लाल रंग
- → मदिरा का उदाहरण → मदहोशी का गुण

10. स्पष्ट है कि: → चेतना से विशिष्ट शरीर ही आत्मा है।

Scanned with CamScanner

→ देह से पृथक व स्वतंत्र आत्मा का अस्तित्व नहीं

→ देह ही आत्मा है (देहात्मवाद)

→ स्पष्ट है कि जब तक देह तभी तक आत्मा की स्थिति, देह का विनाश - आत्मा का भी विनाश

11. ईश्वर →
1. → प्रत्यक्ष नहीं होता
2. → अनुमान से नहीं
3. → शब्द प्रमाण से नहीं
   - → विश्वसनीय → पहचान, अनुमान आधारित
   - अनुमान प्रमाण × है अतः शब्द प्रमाण से नहीं
   - → वैदिक वचन → चक्रक दोष है
4. → ईश्वर जगत का निमित्त कारण नहीं - → स्वभाव वाद
   - Back side →
5. → जगत प्रयोजन पूर्ण नहीं है - आकस्मिकता वाद

ईश्वर का अस्तित्व
- वेदों मे कहा गया है
- वेद प्रामाणिक है

→ ईश्वर का अस्तित्व वेदों के आधार पर और वेदों की प्रामाणिकता ईश्वर के आधार पर।

12. स्वर्ग-नरक → खंडन → प्रत्यक्ष नहीं

- इसी संसार मे स्वर्ग है इसी संसार मे नरक है।
- जो सुख मे है वो स्वर्ग मे है और जो दुःख मे है वो नरक मे है।

Scanned with CamScanner

पुनर्जन्म की अवधारणा → 1. प्रत्यक्ष नहीं अतः मान्य नहीं

2. यदि पुनर्जन्म होता तो आत्मा को अपने पूर्व-जन्म के कार्यों का ज्ञान होता परन्तु ऐसा नहीं होता।

3. प्रारब्ध कर्म, संचित कर्म व संचयी कर्म मान की अवधारणा मान्य नहीं। Backside

4. चार्वाक मतानुसार वर्तमान जीवन ही आखिरी जन्म है।

मोक्ष की अवधारणा का खंडन

1. आत्मा नहीं है अतः मोक्ष की अवधारणा भी मान्य नहीं है।

2. जीवन से दुःख कम हो सकते है पूर्णतः समाप्त नहीं।

3. जीवन से दुःखो की पूर्ण समाप्ति मृत्यु होने पर ही

4. मृत्यु को जीवन का चरम लक्ष्य नहीं माना जा सकता।

5. काम ही जीवन का चरम लक्ष्य है अर्थ उसकी प्राप्ति का साधन है।

Scanned with CamScanner

16. चार्वाक का नीति शास्त्र → चार्वाक दर्शन का नीति विचार उनके ज्ञान मीमांसीय एवं तत्व मीमांसीय मान्यताओं का साक्षात परिणाम है।

नीति शास्त्रीय दृष्टिकोण से चार्वाक इहलौकिक, निकृष्ट, स्वार्थवादी, सुखवादी है

* सुखवाद → चार्वाक दर्शन सुखवादी दर्शन है जीवन का चरम लक्ष्य सुख को मानने वाला सिद्धांत।

* स्वार्थवादी → अपना सुख जीवन का चरम लक्ष्य मानने वाला सिद्धांत अतः स्वार्थ वादी।

* निकृष्ट सुखवाद → शारीरिक सुख जीवन का चरम लक्ष्य अतः निकृष्ट सुखवाद।

* इहलौकिक : → इसी जगत की बात करता है अतः इहलौकिकवादी

चार्वाक मतानुसार इस प्रकार इसी जीवन का अपना शारीरिक सुख जीवन का चरम लक्ष्य मानता है।

चार्वाक चार पुरुषार्थों मे से अर्थ व काम को स्वीकारते है व धर्म एवं मोक्ष की सत्ता का खंडन करते है। इनके अनुसार काम परम पुरुषार्थ है व अर्थ उसकी प्राप्ति का साधन है।

Scanned with CamScanner